

औषधीय वाटिका

आभा सिंह* और विभा परिहार**

औषधीय वनस्पतियां घर के आंगन में लगाकर वातावरण को शुद्ध कर किया जा सकता है। इन पौधों के औषधीय एवं अन्य व्यावसायिक प्रयोग भी हैं। इन वनस्पतियों का धार्मिक महत्व भी है। घर में ऐसी रंग-बिरंगी वनस्पतियां एक अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करती हैं। पूजा-अर्चना के अलावा ये वनस्पतियां अन्य प्रयोग में भी काम आती हैं।

औषधीय वनस्पतियों की पहचान,
स्वरूप विशिष्ट गुण निम्न प्रकार हैं-

आक (मदार) - मदार, भारत और मलेशिया में अधिकांशतः समुद्र तटों पर पाया जाता है। ग्रीष्मकाल के मध्य में भी यह हरा-भरा रहता है। इसके पत्ते की तीन पत्तियां होती हैं। शीतकाल के आरम्भ होते ही इसके पत्ते झड़ जाते हैं। फूल के पराग गहरे लाल रंग के लम्बे तथा गंधहीन होते हैं। फूलना समाप्त होते ही कोष्ठ के भीतर अण्डाकार, बादामी, लाल अथवा बैंगनी रंग के बीज होते हैं जिनकी संख्या बारह तक होती है।

महत्व - छाल, फूल और सूखी पत्तियों



मदार पौधा

का इस्तेमाल रंगने के लिए होता है। छाल से एक प्रकार का धागा बनता है। मदार वृक्ष की लकड़ी हल्की, मुलायम और चीमड़ होती है। यह डिब्बे और रंगीन पेटिका बनाने में काम आती है। छाल से दवा बनती है। पत्ते के रस से शरीर के सन्धि स्थलों, कान और दांत के दर्द का निवारण किया जाता है। यह

*सह प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पारिवारिक संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग; **सहायक प्राध्यापक, वस्त्र एवं तन्तु विभाग, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमार, अयोध्या

4-8 फीट ऊँचाई वाला झाड़ीनुमा पौधा है। है। बीज रोयेदार होते हैं।

इसके किसी भाग को तोड़ने पर सफेद रंग का दूधिया पदार्थ निकलता है। इसका फल मोटी फली के रूप में पत्तों के वर्ण का होता

खादिर (खैर) - खैर मंझोले कद, झाड़ी की किस्म का वृक्ष है। ये बीज से पैदा होते हैं। साल में एक बार इनके पत्ते



खैर

ढाक (पलाश)

टेसू हमारे देश का वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 9-12 मीटर से अधिक नहीं होती है। इसका तना टेढ़ा-मेढ़ा होता है। इसकी पहचान इसके तीन पत्रकों वाले पत्ते हैं जिसका उपयोग पत्तल डोना बनाने में किया जाता है। फूल से एक प्रकार का चमकदार पीला रंग भी तैयार किया जाता है।

महत्व - वृक्ष पर आघात से रस निकलता है, जो जम जाने पर गोंद-जैसा हो जाता है। यह दवा के काम आता है। इसका प्रयोग चमड़ा बनाने के काम में भी होता है। इसकी छाल से रस्सी बनती है। इसके फूलों को स्त्रियां अपने जूड़े में लगाती हैं।

पलाश की लकड़ी यज्ञ में प्रयोग होती है तथा फूल देवताओं पर चढ़ाए जाते हैं।



पलाश



गूलर फल



शमी का पौधा

झड़ जाते हैं। जून में इसकी नई टहनियां उग आती हैं। फिर जुलाई-अगस्त तक इनके सफेद फूल खिलते हैं।

महत्व- खैर की लकड़ी का प्रयोग घर के बल्ली, खेती के औजार, बैलगाड़ी के पहिए और औजारों की मूठ बनाने में होता

है। यह ईंधन तथा कोयला बनाने के लिए भी अच्छी होती है तथा इसका सबसे ज्यादा प्रयोग कत्थे के रूप में होता है। इसकी भीतरी लकड़ी के टुकड़ों को पानी में उबालकर कत्था तैयार करते हैं।

गूलर गूलर का पत्ता मंझोले आकार का,

अपामार्ग (लटजीरा)/ चिचिड़ा

यह 3 फीट ऊँचाई का छोटा झाड़ीनुमा पौधा है। इसके पुष्प व फल लम्बी शाखा पर चारों तरफ स्थापित होते हैं।

महत्व- इसका प्रयोग दवा में पूजा में होता है। ऊर्ध्व शाखा पर लगे पुष्प शीर्ष पर लाली लिये तथा नीचे की तरफ हरापन लिये सफेद होते हैं।



लम्बा और नुकीला होता है, इसका फल गोल, और आकार पीपल के फल से दुगुना होता है। कच्चेपन में इसका रंग हरा रहता है और पकने पर लाल हो जाता है।

महत्व- इसके भीतर, अधिक पकने पर, सैकड़ों छोटे-छोटे कीट उत्पन्न हो जाते हैं इसलिए यह अधिकतर कच्चा ही खाया जाता है। इसे उबाल कर तरकारी और रस के रूप में लिया जाता है। पेट के रोगों के लिए यह बेहतर दवा है। इसके मरहम से घाव अच्छे किए जा सकते हैं।

पीपल

पीपल का वृक्ष अत्यन्त विशाल होता है, पर इसका फैलाव या घेरा कम होता है।

महत्व- गौतम बुद्ध ने पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया था, अतएवं बौद्ध देशों में यह वृक्ष पवित्र माना जाता है। पीपल की आयु बड़ी लम्बी होती है। इसका डण्ठल या वृंत हल्का और चपटा होता है, जिससे यह हमेशा झोलता रहता है।

इसका फल ग्रीष्म काल में फलता है तथा फूल फल के भीतर छिपा होता है। बरगद की तरह इसका बीज भी चिड़ियों के पेट से निकलकर दूसरे वृक्षों अथवा मकान की दीवारों आदि पर जम जाता है। इसके पत्ते खाकर लाख के कीट पलते हैं। हिन्दू और बौद्ध, दोनों में पूजनीय पीपल भारत का सबसे महान् वृक्ष है।



पीपल